



एक दिन.....
तुमसे मिला था.....

अभिषेक नागर

एक दिन तुमसे मिला था

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

एक दिन तुमसे मिला था

(चुनी हुई कवितायें)

‘लिखना मेरे लिए जीवन जीने की तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो, इतने बरस जी लिया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता, अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा निजी उद्देश्य है। “

शरद जोशी

Contents

आपस की बात.....	9
एक दिन तुमसे मिला था.....	10
जब प्यार किसी से होता है.....	11
ओ मिथिला की राजकुमारी.....	12
भामती.....	13
जाओ! भर्तृहरि मत आना.....	18
मुझ पर कविता मत लिखना..	21
एक आकांक्षा...	22
एक दिन.....	23
सखी! मैं तुमसे क्या कहती..	24
राबता खुद से निभाना था.....	25
सीता! सीता! राम पुकारे...	26
वो जब पायल पहन कर चलती.....	28
मैं दिन का मौसम देख कर.....	29
मैंने कहा भी नहीं.....	30
तुम चाहो तो बात भी कर सकती हो.....	31
तुम मुझको उज्जैन घुमाना.....	32
जाने कौन से आँगन को आबाद करेगी.....	34
इशक के हर सितम पर आह कौन करता है.....	35
दोबारा प्रेम में पड़ने वाली लड़कियाँ.....	36
एक ख्वाब.....	37
लौट कर आने वाली प्रेमिकाएँ.....	38
हम रच दें प्रेम कविता.....	39
एक तरफ़ है प्यार उसका.....	40
देखता हूँ जब कभी मैं.....	41
मैं नहीं था प्रेम लायक!.....	42
भूलकर तुमको जिया था!.....	43
वो हमारी हर बात.....	44
प्रेम की निशानियाँ.....	45
जब मैं तुमसे कहता हूँ.....	46
भूल जाओ जो विगत है.....	48
और अब..	49
आपकी कविता में बस यही इक गलती है.....	50

सीता! तुम नहीं असहाय	51
सबसे बड़ी पीड़ा...	52
तुम वो लड़की हो	53
उसने नदी पर लिखी कविता	54
बस इतना याद है...	55
बनारस	56
मुहब्बत शुरू दोस्ती से होगी	57
दिल तो चाहे लगना, जान!	58
गैर के संग वो दिखती है	59
मुट्ठी भर प्यार....	60
मैं तुम्हें भूला नहीं था....	61
कोई बात नहीं करता	62
डीपी में जो लड़की है	63
कौन जिस से कह सकूँ मैं मीत अपनी बात	64
स्मृतियों के वातायन से	66
चाँदनी ओढ़ लेगी आसमानी चुनर	67
अपनी प्रेम कहानी है	68
मैंने जब देखा	72
यूँ ही बसर ज़िंदगी होगी	73
रात का सफ़र लम्बा होगा	74
मैं था तुम थी बातें थी	75
उज्जैन से पहले	76
इसलिये था घड़े का पानी मीठा	77
बादल	78
विरह से व्यथित मन में	79
अब हमको मिल लेना चाहिये!!	80
ये माना तुम अब नहीं प्रिये	81
सारे लोग उस सूरज को पाने जा रहे हैं	82
रूठा पिया मनाऊँ मैं कैसे,	83
कर्ण मौन है	84
रहनुमा बदगुमां हो शायद	85
रात के तीसरे पहर	86
बस एक बार	87
रूठे यार मना रहे हैं हम	88
अंदर अंदर घटती हो	89

सर्द दिसम्बर तनहा चाँद	90
अगर दिल में मोहब्बत नहीं है	91
रावण के मन में था रावण	92
हम बस राह का पत्थर पलटने वाले है	95
अजीब आँधी वक्रत चला गया	96
जहाँ झुक जाये सिर , उसे दर कहते हैं	97
हम तुझको उज्जैन घुमाया करते थे	98
हाल ए दिल	99
भूल जाता हूँ	100
एक तुम्हारे	101
स्पर्श	102
इंदौर	103
माँ	104
ज़िन्दगी से मेरी कोई दुश्मनी भी नहीं	105
तेरा आँसू बहाना ग़ज़ब हो गया	106
दर्द होगा न आह होगी!	107
पहली बारिश	108
मैं और वो	109
उसकी हर इक बात मुहब्बत	110
श्री राम	111
बुद्ध	112
शाबाश अभिषेक	113
उसका दिया ताबीज़ ग़ज़ल	114
अप्रेम विवाह	115
ज़ख्म की ऊपरी सतह पर लिखना	116
कविताएँ	117
बातें बिगड़ी बातों से	118
अंदर अंदर घुटना दुख है	120
तेरी यादों में यूँ बेसबब खो गया	121
लघु कविताएँ	122

आपस की बात

ये मेरी कविताओं की दूसरी किताब है पहला प्रयास “ शायद तुम्हें पता न हो “ आये दो साल हो गए.. तब से अब मैं एक लेखक और इंसान के तौर पे भी काफ़ी बदलाव आए हैं जो आपको पढ़कर महसूस भी होगा! डायरी लिखने की आदत तो है नहीं सो अधिकतर कविताएँ ऑनलाइन ही मौजूद है.. इस किताब में उन्हें व्यवस्थित करने का एक प्रयास भर किया है! एक कारण ये भी था कि आजकल कुछ लिखने का मन भी नहीं होता... इन दिनों बहुत लोगों को पढ़ा और ये अहसास हुआ कि अपना लिखा कितना कमतर है.. कितना कुछ है जो बेहतर तरीके से लिखा जा चुका है.. इसलिये इस पहले कि अपने लिखे से बिलकुल ही नफ़रत हो जाए... उन्हें एक जगह पिरो देता हूँ सुविधा रहेगी और लोगों को एक जवाब भी मिल जाएगा कि आपकी अगली किताब कब आयेगी!

मुझसे जुड़ने के लिये :-

Instagram : @yours_abhishekk

Yourquote : abhishekk nagar

Facebook : abhi.nagar.0408

Mail : abhishek.nagar8@outlook.com

एक दिन तुमसे मिला था

बरसों से सोये सरोवर में
अचानक जल हिला था
एक दिन तुमसे मिला था

दिशाहीन नाविक यकायक एक दिन
किसकी खातिर धार के विपरीत मुड़ा था
आधे आधे हृदय के टुकड़े समेटे
हौले हौले से कोई रिश्ता जुड़ा था
मन की उस बंजर ज़मीन पर
प्रेम का पौधा खिला था
एक दिन तुमसे मिला था

मैं कभी कह भी न पाया था जो तुमसे
तुमने आँखों से वही वादा किया था
और उसी को ज़िंदगी कहने लगे फिर
एक पल जो दोनों ने संग में जिया था
देह से मृतप्राय चातक को
किसी का जल मिला था
एक दिन तुमसे मिला था

जब प्यार किसी से होता है....

सूने से मन के आँगन में कोई रात रानी जब खिलती है
जिस दुनिया से छुपते थे अब वो दुनिया हँस कर मिलती है
हर आहट पर यूँ चौंक उठें दिल धक धक धक धक करता है
“ अच्छा! सुनो “ खैर जाने दो , दिल कहने से भी डरता है
बातें बातें बातें करना चाहे ये दिल बिलकुल न सोता है
जब बहुत दिनों के बाद अचानक प्यार किसी से होता है

हर रोज़ में देखूँ ख्वाब एक कितना खुश खुश ये चेहरा है
तुम लाल जोड़े में खड़ी हो बाएँ और मेरे सर पर सेहरा है
हाँ माना जल्दी ठीक नहीं पर अब और रहा नहीं जाता है
मैं खुद का नाम भी लेता हूँ तो साथ तुम्हारा आता है
दिल तुम्हारी ही बातों को अब शब्दों में रोज़ पिरोता है
जब बहुत दिनों के बाद अचानक प्यार किसी से होता है...

ओ मिथिला की राजकुमारी

किन शब्दों में बयाँ करें हम , कहने से भी डरते हैं
ओ मिथिला की राजकुमारी , हम बस तुम पर मरते हैं

तुम दुनिया की बातें करती , मैं होंठों को तकता हूँ
जाने क्या हो गया आजकल , नींद में बक बक करता हूँ
तुमको सोचूँ , जल्दी सोऊँ , मैं भी क्या क्या करता हूँ
तुम आती हो ख़्वाब में सो अब , देर से सोकर उठता हूँ
तुमको सौंपा जीवन अपना , आज से प्रण हम करते हैं
ओ मिथिला की राजकुमारी हम बस तुम पर मरते हैं

बातें तुम्हारी गंगा जैसी , शब्द शब्द में पटना है
लगता है कि रूप तुम्हारा , सीता माँ का गहना है
तुमको लेकर , हाथ पकड़ कर , दूर कहीं अब बसना है
होंठों से हम कुछ न बोले , आँखों से ही कहना है
जितना लिखा , सब है तुम्हारा , लो हम आज यह कहते हैं
ओ मिथिला की राजकुमारी , हम बस तुम पर मरते हैं....

भामती...

है धन्य धरा ये भारत भू
सुर नर मुनि जन गुण गाते हैं
है धन्य सभी वे महापुरुष
खुद को जो अमर कर जाते हैं

है धन्य धन्य उस नारी को
जिसने भी त्याग बलिदान किया
निज की आहुति देकर के
इतिहास में अपना नाम किया

थी रूपवती वो ज्ञानी भी
जब धर्म की ओर झुकाव हुआ
भामती नाम था नारी का
वाचस्पति से विवाह हुआ

न्याय मीमांसा धर्म सत्य
सारे उनको ही आते थे
वाचस्पति थे विद्वान ऐसे
कि सर्वज्ञ कहाते थे

थे अति धूनि स्व कर्म रमें
ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखना था
उसे आगे ना पीछे कुछ
ना दिखता था न दिखना था

नव वधु आई है निज घर में
इसका भी तनिक न ध्यान हुआ
कब ऊषा आई कब निशा गई
एक पल न मगर व्यवधान हुआ

काल चक्र चलता ही रहा
कानों में शब्द तरस गए
दिन बीता महीने बीत गए
यौवन के बारह बरस गए

था ध्येय एक था लक्ष्य एक

टीका को पूरा करना है
फिर छोड़ छाड़ सांसारिक मोह
जा वन सन्यासी बनना है

और जिस दिन टीका पूर्ण हुआ
तब ध्यान पास में जाता है
सोने के कंगन वाला हाथ
एक दिये की लौ को जलाता है

माथे पर देखा बिंदी को तो
सहसा मुखर हुआ फिर मौन
सुंदर नारी थी पास खड़ी
बोले हे देवी आप हो कौन

है धन्य भाग मेरे कि अब
आप आखिर कुछ तो बोले हैं
परमेश्वर तप अब पूर्ण हुआ
कि आपने लब तो खोले हैं

बोली मैं भार्या आपकी हूँ
विधिवत इस घर में लाये थे
हुए बारह वर्ष इस बात को
कि आप मुझ ही से ब्याहे थे

पर इतने बरस तू कहाँ रही
मुझको तो कुछ न दिखता था
ताम्र पत्र और थे मोर पंख
मैं लिखता था बस लिखता था

साँझ दिए की लौ को बढ़ाने
प्रतिदिन हे नाथ मैं आती थी
और प्रात काल की बेला में
फिर उसको ही हटाती थी

इसलिए कुछ भी न कहती थी
तप में आपके व्यवधान न हो
बैठा करती थी यहीं पास कि
तनिक भी असम्मान न हो

वाचस्पति थे विस्मृत अवाक्
मुख से कुछ भी न कहते थे
आँखों में ग्लानि भरे अश्रु
झर झर झर झर झरते थे

बोले हाँ इतना याद मुझे
इक हाथ संध्या को आता था
दिन में भोजन की थाल लिए
कोई तो हाथ बढ़ाता था

मैं खुद को कैसे माफ़ करूँ
हाय कैसा मैं निर्मोही हूँ
कितने ही बरस बर्बाद किये
हाँ मैं ही तुम्हारा दोषी हूँ

जिस दिन यह टीका पूरी होगी
मुझको संसार बिराना है
मैंने था यह प्रण लिया कि फिर
वन में उस ही क्षण जाना है

माना मैं तुम्हारा दोषी हूँ पर
अब इतना ही कर सकता हूँ
यह टीका है जीवन पूँजी
सो नाम भामती रखता हूँ

मुझको अब चाहे जग भूले
संसार तुझे न भुलाएगा
जब जब ब्रह्मसूत्र की बात होगी
बस नाम तेरा ही आएगा

हे नाथ नाथ मैं धन्य हुई
ये भी तो आप ही जानिए
कौन होगा मुझसा कृत कृतार्थ
खुद को न दोषी मानिए

हालाँकि उनका दोष नहीं पर
फिर भी ग़लती अगर हुई
शायद यही था विधि का विधान
भामती युगों तक अमर हुई

कितनी सुंदर वो निष्ठा थी
था कितना पवित्र वो त्याग
था कितना सुंदर प्रेम वो
थे कितने पावन उनके भाग

जाओ! भर्तृहरि मत आना...

राजा भर्तृहरि, उज्जैन के महान शासक विक्रमादित्य के बड़े भाई थे। अपने समय में वे बेहद प्रतापी, विद्वान और न्यायप्रिय शासक थे जो अपनी पत्नी पिंगला से बेहद प्रेम करते थे। मगर घटनाक्रम कुछ इस तरह से मोड़ लेता है कि वो सब कुछ छोड़ छाड़ कर जंगल में वैराग्य ले लेते हैं...!!!

जाओ! भर्तृहरि मत आना
अपराध पिंगला का क्षम्य नहीं
तुमने भलीभाँति जाना

जिस पर तुमने सर्वस्व लुटाया
जिसने तुम पर सर्वस्व लुटाया
उस “ विक्रम “ ने फिर क्या पाया
झूठा लांछन सबने लगाया
किस किस को दोषी ठहराना
जाओ! भर्तृहरि मत आना

एक दिन तुमने अमरफल पाया
दिव्य साधु जो लेकर आया
होगा अमर जिसने भी खाया
तुमने उसे पिंगला को भिजवाया
क्या उसके भाग्य में था खाना!
जाओ! भर्तृहरि मत आना

नारी का हृदय क्षिप्रा है माना
जो जितना उतरे उतना जाना
पर जिसने भार प्रेम को जाना
तुमको अपना न पहचाना
फिर उसको क्या समझाना
जाओ! भर्तृहरि मत आना

माना बात बहुत थी घातक
तुम जिस बरखा के थे चातक
उसका प्रेमी था सेनानायक
प्रेम नहीं था जिसके लायक
उसको खोकर क्यों पछताना
जाओ! भर्तृहरि मत आना

बात हुई थी ये हैरत की
आई इक दिन राजनर्तिकी
ख्याति थी जिसकी सुरत की
एक दिव्य फल वो अर्पित की
महाराज! आप ही खाना
जाओ! भर्तृहरि मत आना

तुमसे मोह माया न छूटी
सहसा इक दिन तंद्रा टूटी
सब है बातें मिथ्या झूठी
मन में विरह की किरणें फूटी
जाओ! उज्जयिनी न भुलाना
जाओ! भर्तृहरि मत आना

मुझ पर कविता मत लिखना..

रामायण में जो लिखा है,
कितनी तरह से लोग पढ़ें..
राम पर आक्षेप लगा तो
सीता जाकर किस से लड़े...

कान्हा राधा ओ' सतभामा,
सबको ही दोषी ठहराया..
जितना लिखा उतने में पर
प्रेम कहाँ फिर कहो समाया...

शब्द शब्द के मतलब है सौ,
पढ़े लिखों का ये शहर है..
जिस पर जितना कम लिखा है
उसका उतना प्रेम अमर है...

जो मैं पिय के नैन बसूँ तो,
शब्दों में फिर क्यों दिखना..
प्रिये! तुम्हें सौगंध है मेरी
मुझ पर कविता मत लिखना...

एक आकांक्षा...

तुम बनो पहली नदी
जो मिले मेरे हृदय सागर में
पहली बारिश की बूँद
जो छूए तम भावनाओं को मेरी
पहला ऐसा पवित्र रिश्ता
एक ही नाम से हम एक दूजे को कह लें
तुम भेजो मुझे अपनी कुंवारी कविताएँ
सारी दुनिया के पढ़ने से पहले.....

एक दिन

एक दिन कोई और भी उठायेगा,
तुम्हारे साथ पतझड़ की पत्तियाँ..
एक दिन कोई गिनायेगा तुम्हें,
कन्धे तक आते बालों की खूबियाँ..
एक दिन तुम्हारी बातें किसी के,
लौटते रास्तों का गीत होगी...
एक दिन तुम्हारी आवाज़ किसी के लिए,
दुनिया का सबसे खूबसूरत संगीत होगी....

सखी! मैं तुमसे क्या कहती..

सखी! मैं तुमसे क्या कहती

कौन अचानक हृदय में आया
शुभ्र वर्ण अंतस को भाया
अंग अंग प्रत्यंग लजाया
आँखें अश्रु झरती
सखी मैं तुमसे क्या कहती!

मन में अश्व प्रेम के कूदे
देह काँपती कुछ न सूझे
नैनन हर पल उनको ढूँढ़ें
दुनिया से अब डरती
सखी! मैं तुमसे क्या कहती

राब्ता खुद से निभाना था

राब्ता खुद से निभाना था
उस मोड़ पर ठहर जाना था

मैं खुद ही नहीं आता मगर
तुम्हें तो शादी में बुलाना था

ये देख के उससे मुहब्बत की
घर के बगल में मयखाना था

मुझे मालूम है ग़लती मेरी है
बस उसको थोड़ा सताना था

बीएचयू से रामनगर के रास्ते में
वो कौन थी जिसका ठिकाना था

उसकी मुहब्बत खुदा की नेमत
मेरी मुहब्बत झूठा फ़साना था

किसे ढूँढती हो कविताओं में
किसे तुम्हारी जगह आना था

बहुत याद आ रही है तुम्हारी
ये सब लिखना तो बहाना था

सीता! सीता! राम पुकारे...

वन में रहकर दर दर भटके
कौशल्या के राज दुलारे
कैसी बिपदा आन पड़ी है
सीता! सीता! राम पुकारे

सबकी बिगड़ी राम बनाये
राम की बिगड़ी कौन सँवारे
कैसी बिपदा आन पड़ी है
सीता! सीता! राम पुकारे

हाय मति कहाँ गई तुम्हारी
बोलो लखन तुम क्यों आए
वन में फिरते दानव नाना
तुम क्यों एकाकी छोड़ आए
हृदय मेरा धक धक करता
कुछ अनर्थ न हो जाए
सीते मेरी हो सकुशल या
देह से प्राण चले जाएँ
सबको खोकर जिसको जीता
आज उसी को भी हारे
कैसी बिपदा आन पड़ी है
सीता! सीता! राम पुकारे

हे वनमाली! पत्ते डाली
सीता को देखा है क्या
सुनता हूँ कोई भी धुन तो
लगता है सीता है क्या
कोकिल देखो नदियाँ देखो
कैसे अब इठलाती हैं
सीता के जाने से इनकी
सुंदरता बढ़ जाती है
जाने किस पर पैर पड़े हो
वन के कंकर राम बुहारे
कैसी बिपदा आन पड़ी है
सीता! सीता! राम पुकारे

वो जब पायल पहन कर चलती

वो जब पायल पहन कर चलती
तो पूरी दुनिया थिरकने लगती...
वो जब रंगों से खेला करती,
तो इंद्रधनुष आकर उसे देखा करते...
वो जब कविता पढ़ा करती,
तो सारे शब्द कई दिनों तक सो नहीं पाते...
उस लड़की को जब प्रेम हुआ
तो उसकी पायल उतार दी गई
रंग छीन लिए गए और
कोरे कागज पर आँसुओं से लिखी
कविताये दी गई....

मैं दिन का मौसम देख कर

मैं दिन का मौसम देख कर
बता सकता हूँ यकीनन
कि तुमने क्या रंग पहना होगा
आसमान में बादलों को
देख कर समझ जाता हूँ मैं
तुम्हारा मिज़ाज आज कैसा होगा
वैसे ही जैसे
आज भी तुम्हारे कॉलेज से
किसी की रिक्वेस्ट आने पर
मैं समझ जाता हूँ
कि तुमने फिर पिछली रात
किसी को सुनाई थी मेरी कविता...

मैंने कहा भी नहीं...

मैंने कहा भी नहीं...
तुमने सुना भी नहीं...
इश्क अधूरा रह गया.. हमारा...
मिल के बिछड़ते रहे...
दिल यूँ तड़पते रहे...
कश्ती को अपनी न मिला..किनारा...
लफ़्ज़ों के जो मानी है...
मेरी ये जो कहानी है..
तुम से ही... तुम से ही...
आँखों में ये जो पानी है...
सारी ये जिंदगानी है....
तुम से ही... तुम से ही....

तुम चाहो तो बात भी कर सकती हो

मेरी स्टोरी सबसे पहले देखती हो
तुम चाहो तो बात भी कर सकती हो

क्या तुम्हें भी मोहब्बत का रोग लग गया
देख रहा हूँ आजकल “ बशीर ” पढ़ती हो

बहुत नर्म कागज़ पर लिखा है हाले दिल
मुझे मालूम है तुम हर्फ़ हर्फ़ चूमती हो

जैसे एक बया बनाती है अपना आशियाँ
कितने सलीके से तुम बाल गूँथती हो

एक ही ख्वाब कई कई बार देखा है मैंने
किचन से तुम्हें पुकार रहा हूँ “ सुनती हो! ”

*बशीर बद्र

तुम मुझको उज्जैन घुमाना

झंझावातों के जीवन में
इक सुकून बन जाना
मैं जब तुमसे मिलने आऊँ
तुम मुझको उज्जैन घुमाना

तुम जिस पर अक्सर लिखते हो
मुझे वहाँ ले चलना
कोठी रोड पर घूम रहें हो
कितना सुन्दर सपना
मैं तुमसे जो पूछ लूँ फिर यूँ
जन्नत कैसी लगती होगी
तुम फिर अपनी चुप्पी तोड़ो
धीरे से हाथ पकड़ लो कह दो
बिलकुल तुम सी जाना....
तुम मुझको उज्जैन घुमाना

एक कविता याद है मुझको
जिसमें थी चौपाटी
महाकाल से वो तुमको
सीधे वहीं ले जाती
फिर एक रोज़ वो पल भी आया
तुमने हाले दिल जो सुनाया
सामने वाला तब शरमाया
और जवाब में कुछ न कह कर
तुम्हारा झूठा खाना...
तुम मुझको उज्जैन घुमाना....

जाने कौन से आँगन को आबाद करेगी

जाने कौन से आँगन को आबाद करेगी
वो जिस से भी बँधेगी उसे आज़ाद करेगी

मैं उसे इतनी सारी कविताएँ सुना दूँगा
कि वो जहाँ भी कुछ पढ़ेगी मुझे याद करेगी

मुझसे माँगते हो अगर मशवरा तो सुन लो
मुहब्बत बुरी चीज़ है तुम्हें बर्बाद करेगी

अजीब लड़की है मुझसे मुहब्बत नहीं करती
मगर कहती है शादी मेरी शादी के बाद करेगी

इश्क़ के हर सितम पर आह कौन करता है

इश्क़ के हर सितम पर आह कौन करता है
दुनिया की शर्तों पर निबाह कौन करता है

जितनी आसानी से हमने शिकस्त पाई है
सोच कर देखना ऐसे तबाह कौन करता है

तुम्हारी कैद में रहने वालों से रश्क है मुझे
ये कौन सा गुनाह है ये गुनाह कौन करता है

वो सुनाने वाले हैं महफ़िल में अपनी ग़ज़ल
और मैं देख रहा हूँ कि वाह कौन करता है

दोबारा प्रेम में पड़ने वाली लड़कियाँ

दोबारा प्रेम में पड़ने वाली लड़कियाँ
पढ़ने लगती है विरह के गीत
सच्चा प्रेम करने वाले लड़के
भूल जाते हैं कविताएँ लिखना
किसी की सतायी हुई लड़कियाँ
उन्हें चाहने वाले लड़कों को
समानुपाती कष्ट देने लगती हैं...
घर से भागी हुई लड़कियाँ
अपने पति की हर बात में हाँ में हाँ मिलाती है
बिछड़े प्रेमी से अपनी प्रेमिका को
मिलाने वाले लड़कों के सामने
आगे चलकर ज़िंदगी हार जाती है!

एक ख़्वाब

और तुम्हें
एक बार को देखते ही मैंने देख लिया था
एक ख़्वाब
कि शादी के इक्कीसवें दिन
तुम फ़ोन लगा कर कहती हो कि
आज कुछ बाहर का खाएँगे
और मैं भी अड़ जाऊँ इस ज़िद पर
कि आज कहीं जाने का मन नहीं है
मगर जब ऑफ़िस से लौटते वक़्त
मैं लाऊँ पानीपुरी तुम्हारे लिए
तुमने बना रखी है
मेरी पसन्दीदा भिण्डी की सब्ज़ी..
और मैं मुस्कुराते हुए बस ये पूछूँ
“ आज क्या किया दिन भर ? “
तुम इतना सा कहो,
“ तुम्हारा इन्तज़ार...!!! “

लौट कर आने वाली प्रेमिकाएँ

लौट कर आने वाली प्रेमिकाएँ
कभी अपने प्रेमी को नहीं पहचान सकी...
सब कुछ भूल जाने की क्रसमें खाने वाले,
दो जन्मदिन याद रखते हैं साल में...
सच्चा प्रेम करने वाले इन्सान से
देह नहीं आत्मा सँवरती है
एक कवि की ठुकराई हुई लड़की
तमाम उम्र कविताओं से नफ़रत करती है

हम रच दें प्रेम कविता.....

जन्मों जन्मों तक तृप्त रहें, जब सारे बंधन घुल जाएँ
दोनों आपस में खो जाएँ, और फिर रच दें प्रेम कविता

जब कृष्ण पक्ष से नैन तुम्हारे अश्रु से आप्लावित हो
सुवासित केश उघड़े छुपे वक्षों पर यूँ आच्छादित हो
ये रेशम उँगलियाँ तुम्हारी चंद्र कटि पर नृत्य करें
इन साँसों से उन साँसों तक रोम रोम उत्साहित हो
तब भर कर तुमको बाहों में आगोश में अपनी लेकर के
हम दोनों अपने होंठ मिला कर रच दें प्रेम कविता

जब शर्म हया से प्रिये तुम्हारा अंग अंग सकुचाता हो
सर्वस्व समर्पण भाव रहे यौवन खुद पे इतराता हो
नख से शिख तक मोम देह पर तप्त अधर रख दूँ अपने
आहों में मेरा नाम रहे जो प्रेम सुधा सुलगाता हो
दो देह मिले इक रूह बनें अग्नि से अग्नि मिल जाए
और चुम्बन की बौछारों से फिर रच दें प्रेम कविता

एक तरफ़ है प्यार उसका

एक तरफ़ है प्यार उसका
एक तरफ़ संवेदना है
मेघ तो बरसा करेंगे निरंतर
एक पल तो पर धरा को तपना है
ज़िंदगी के धूप वाले रास्ते पर
प्रेम की छाया तले ही चलना है
एक को निकालने को
दूजा काँटा भेदना है
एक तरफ़ है प्यार उसका
एक तरफ़ संवेदना है..

देखता हूँ जब कभी मैं

देखता हूँ जब कभी मैं
तुम्हें मुझको देखते हुए
लगता है जैसे जल उठी हैं अनेकों
दीपमालिकाएँ हरसिद्धि मंदिर के आँगन की

और तुम्हारी नीरव मुस्कान से
तत्क्षण ही हार जाती है
इस्कॉन मंदिर की दीवारों में छुपी
सारी नृत्य करती गोपियाँ

ना जाने कितने जन्मों से हम
करते रहे है प्रेम इस नगरी में
वो प्रेम जो दुनिया में सबसे अनूठा है

स्वप्न में भी तुम्हें यूँ स्पर्श करता हूँ मैं
जैसे रामघाट पर कोई साधु
अर्घ्य देने को क्षिप्रा का पानी छूता है...

मैं नहीं था प्रेम लायक!

मैं नहीं था प्रेम लायक!

सौंपे सब अधिकार तुमने..

प्राण तन मन वार तुमने..

एक शापित यक्ष को तुमने बनाया लोकनायक...

मैं नहीं था प्रेम लायक!!

तुमने जीवन को दिशा दी...

प्रीत इकतरफा निभा दी..

पर खोया है मैंने बहुधा जो भी कुछ पाया अचानक...

मैं नहीं था प्रेम लायक!!!

भूलकर तुमको जिया था!

भूलकर तुमको जिया था!

याद है निर्णय कठिन था..

अश्रु विरचित रैन दिन था..

तब विरह के कालकूट को मैंने होंठों से पिया था...

भूलकर तुमको जिया था!!

जग यशस्वी कह रहा था..

शब्द मेरे पढ़ रहा था.,

जिनमें अपनी पीड़ा को मैंने तुम्हारा स्वर दिया था...

भूलकर तुमको जिया था!!

वो हमारी हर बात

वो हमारी हर बात पर ये कह कर साफ़ बच जाते हैं
हम आपके हिसाब से नहीं संस्था को नियमों से चलाते हैं

ज़्यादातर लोगों की आस्था को जिस बात से ठेस लगती है
विरोध पर वो इसे हमारी व्यक्तिगत समस्या बताते हैं

जिनके हाथों में वो आग थी कि बाढ़ का पानी सूखा देते
वो लोग उन हाथों से बाढ़ पर कविता लिखवाते हैं

वो बन कर समालोचक जब समीक्षा के लिए घर गए
आते ही बोले बढ़िया लेखक है खाना अच्छा बनाते हैं

प्रेम की निशानियाँ

किसी सभ्यता की खुदाई
या प्राचीन नगरों के भग्नावशेषों में
नहीं मिलेगी तुम्हें
प्रेम की कोई भी बची हुई निशानियाँ

इंसान इसके हकदार नहीं.....
प्रेम की वस्तुएँ,
ईश्वर अपने पास रखता है

जब मैं तुमसे कहता हूँ

जब मैं तुमसे कहता हूँ
कि सुनो
तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ
तो उसका प्रयोजन यह नहीं
कि एक पल की निर्लस चुप्पी का
मैं अपने कवित्व से निर्वात भर रहा हूँ;
ना ही यह कि,
मेरे पास अब करने को
तुमसे पहले सी बहुत बातें न रही...
ये बस मेरी तरफ़ से
पुष्पांजलि है,
मेरे प्रति तुम्हारे अनुपम प्रेम की...
है जवाब उन सवालों का,
जो मन्दिर की दीपमालिकाओं समान
दो आँखें करती रहती हैं....

तुम्हारी अनवरत बहती बातों पर,
सिर्फ़ मेरा एक पूर्ण विराम है..
ये ऐसे शब्द हैं जो निकले हैं,
मेरे असीमित भावनाओं के ब्रह्माण्ड से;
जैसे की गुंजित होती है,
ॐ की ध्वनि सृष्टि में कहीं...

मैं जब कहता हूँ कि,
प्रिये! तुमसे प्यार करता हूँ;
तो इसका मतलब यह नहीं
कि मेरे पास ऐसा कहने को
सुन्दर कविताएँ नहीं हैं...
ये सिर्फ़ एक कविता का
यूँ ही कहा गया कोई वाक्य नहीं है....
ये मेरी सारी कविताओं का सार
एक वाक्य में है.....!!!

भूल जाओ जो विगत है

भूल जाओ जो विगत है

आओ तुमको बाँह में लूँ
प्रेम मय स्व छाँह में लूँ
इस चराचर विश्व में सुख ओ दुख दोनो सतत है
भूल जाओ जो विगत है

प्रेम से क्यूँ दूर होना
प्रेम माटी प्रेम सोना
प्रेम शक्ति प्रेम भक्ति प्रेम ही सारा जगत है
भूल जाओ जो विगत है

और अब..

और अब..

जबकि भावनाएँ बहुत ही सस्ती हो गई हैं

और शब्द बेहद ही आसान

अजनबी कब के अपने हो चुके...

और सारे अपने अनजान....

और अब,

जब कि तुम्हें भी नज़र आती है

मेरे गीतों में तुम्हारी पहचान,

फिर भी प्रिये तुमसे अब तक

मुझ पर कोई कविता नहीं लिखी गई ..."

आपकी कविता में बस यही इक गलती है

आपकी कविता में बस यही इक गलती है
आपके साथ मेरी वैचारिक असहमति है

आप हमारी आलोचना कर भी कैसे सकते हैं
हमारे यहाँ तो आपकी कविता छपती है

मैंने पूछा आपको इतना अधिकार किसने दिया
कहने लगे साहित्य हमारी पैतृक सम्पत्ति है

कल पता चला मुझे कि आलोचना करने के लिए
कम से कम एक बार तारीफ़ भी करनी पड़ती है

सीता! तुम नहीं असहाय

काट दो वो हाथ कर से
आगे से रावण बढाए
सीता! तुम नहीं असहाय

क्यूँ सहे आघात ऐसे
बालि फिर तारा हरेंगें
राम कल होंगें न होंगें
पर रावण आते रहेंगें
मौन कब तक यूँ रहोगी
पापी कैसे दण्डित होंगे
आयेगा ऐसा भी कुसमय
रावण महिमा मण्डित होंगे
खुद बनो रणचण्डी तुम ही
और तुम ही करो न्याय
सीता तुम नहीं असहाय!

सबसे बड़ी पीड़ा...

सबसे बड़ी पीड़ा...

सबसे बड़ा दुख...

किसी के जाने पर नहीं हुआ....

प्रेम सम्बन्ध खत्म होने पर भी नहीं हुआ....

तब हुआ जब जाने वाले को

जाने का अफ़सोस नहीं हुआ....

तब हुआ जब जाने वाले को

विगत का अफ़सोस हुआ...

प्रेम में होने का अफ़सोस हुआ!!!!

तुम वो लड़की हो

तुम वो लड़की हो
जिसके लिए लिखी जाती है कविताएँ
बुने जाते हैं ख़्वाब
गाई जाती है नज़्म
तारे तोड़ लेने की हिम्मत हो जाती है
दुनिया से लड़ जाने की ताक़त आ जाती है
तुम इतनी अच्छी हो...
कि मैं बहुत सोचने के बाद भी
लिख नहीं पाता तुम पर कुछ..
ढाल नहीं पाता तुम्हें चन्द लफ़्ज़ों में
तुम कहती हो ये सब
बड़ी बड़ी बातें हैं
और हर बार वही भोली सी शिकायत
लेकर बैठ जाती हो
कि आप मुझे “तुम” कहा करें
कि आप मुझे “आप” न कहा करें...

उसने नदी पर लिखी कविता

उसने नदी पर लिखी कविता
वो बहकर समंदर में मिल गई...

उसने फूलों पर लिखी कविता,
इक रोज़ उन पर तितली बैठ गई...

उसने पत्तों पर लिखी जब कविता
बेमौसम सारी पतझड़ में गिर गई

जिस जिस पर उसने लिखा
वो सब उसे छोड़ कर चली गई

तुम जानना चाहती थी न कि
तुम पर कोई कविता क्यूँ नहीं लिखी गई...

बस इतना याद है...

बस इतना याद है...
कोई यक्ष आया था ख़्वाब में ,
बोला मुझसे कि क्या चाहिए
तुमसे असीमित प्रेम या
कभी न भूलने वाली स्मृति....

मुझे नहीं याद आ रहा,
कि मैंने क्या माँगा था.....

बनारस

सर्दियों की दोपहर बनारस
याद की शाम-ओ-सहर बनारस

जीवन, मृत्यु, दुनियादारी
इन सब से बेखबर बनारस

घाटों पर बसता है मन और
आँख है गंगा, नज़र बनारस

कैसे थक सकता है राही
तुम हो और है सफ़र बनारस

इश्क़ के दो ही रूप हैं सच्चे
एक तुम और एक शहर बनारस

मुहब्बत शुरू दोस्ती से होगी

ख़त्म भी फिर इसी से होगी
मुहब्बत शुरू दोस्ती से होगी

जितना चाहे बन सँवर लो
मुहब्बत मगर सादगी से होगी

क्या फ़ायदा इश्क़ करने का
शादी सभी की कुंडली से होगी

हमारे रिश्ते की चाय मीठी
आँसुओं की चाशनी से होगी

मुझे ये ख़ौफ़ है कि मेरी शादी
उसी के शहर की लड़की से होगी

दिल तो चाहे लगना, जान!

दिल तो चाहे लगना, जान!
क्या उज्जैन क्या पटना, जान!

सबसे मीठे तीन लफ़्ज़ वो
उस पर तेरा कहना, जान!

चाँदनी रात में मोती बिखरे
ऐसा तेरा हँसना, जान!

इक रात चुरा आधे चाँद को
बना दूँ तेरा गहना, जान!

आँखें आँखें लाख किताबें
आकर तुम भी पढ़ना, जान!

मरते दम तक याद रहेगा
तेरा मुझको कहना, जान!

ग़ैर के संग वो दिखती है

ग़ैर के संग वो दिखती है
दिल पर छुरी चलती है

क्या तुम अब भी मेरी हो
सारी दुनिया कहती है

जनवरी की सर्दी में आँखें
सारी रात बरसती है

घाट किनारे पड़ा रहा मैं
वो अब बहती रहती है

जिस तितली को रिहा किया
अब दुनिया उसे पकड़ती है

मैं भी अब गुमसुम रहता हूँ
वो भी अब कम हँसती है

मुट्ठी भर प्यार....

आकाश भर चाहत में...
जब मिलता है समंदर भर दीवानापन...
तितली भर सच्चाई...
रातरानी की मासूमियत....
पूर्णमासी का इंतज़ार....
और जुगनू का ऐतबार...
तब जाकर कहीं बन पाता है...
मुट्ठी भर प्यार....

मैं तुम्हें भूला नहीं था....

मैं तुम्हें भूला नहीं था....

लौट आने की शपथ पर ,
बढ़ रहा अनजान पथ पर,
तन बदन सब थक चुका पर
हौंसला टूटा नहीं था...
तुम चाहे मानो न मानो,
मैं तुम्हें भूला नहीं था....

वेदना असहाय सी थी,
चेतना कृशकाय सी थी,
लड़ियों से मोती बिखर गये
पर धागा टूटा नहीं था...
याद तुमको न किया पर,
मैं तुम्हें भूला नहीं था....

कोई बात नहीं करता

कोई बात नहीं करता न कोई बात मुझे बताता है
वो एक शख्स जो रोज़ मेरी प्रोफ़ाइल पर आता है

दरमियान में हमारे ख़ामोशी है और कैसी ख़ामोशी
हर लफ़्ज़ जुबान से बाहर निकलते हुए घबराता है

तुम क्या जानो कितनी हैरत होती है ये देखकर कि
कैसे कोई अजनबी लड़का तुम्हें नाम से बुलाता है

तेरे बाद मेरे अशआर ऐसी छाँव हुए हैं कि मेरी जान
इश्क़ से झुलसा हर कोई यहाँ पल दो पल बिताता है

डीपी में जो लड़की है

डीपी में जो लड़की है
कितनी प्यारी दिखती है

दिन भर खोई खोई सी
अपनी धुन में रहती है

रोज़ रात सोने से पहले
मेरा लिक्खा पढ़ती है

कब आओगे मिलने को
मुझसे पूछा करती है

वो मुझ में ऐसे है जैसे
उज्जैन में क्षिप्रा बहती है

कौन जिस से कह सकूँ मैं मीत अपनी बात

कौन जिस से कह सकूँ मैं मीत अपनी बात

जा रहे हो बीच पथ में तुम जो साथी
वेदना असीमित है मन में मेरे , साथी
है अगर ये स्वप्न तो मुझको जगा दो
मैं तुम्हें कैसे भुला पाऊँगा..... साथी
यादें श्यामल , प्रेम श्यामल और श्यामल रात
कौन जिस से कह सकूँ मैं ... मीत अपनी बात

तुम मिली मैंने सुयश इस जग में पाया
मैं तुम्हारे बिन था क्या... भुला भुलाया
जब मैंने खोजा न था कोई भी जग में
तब तुम्हारा प्रेम हृदय द्वार आया
धीरे धीरे भर दिया..... तुमने विगत आघात
कौन जिस से कह सकूँ मैं ... मीत अपनी बात

यादों में ही अब तुम्हारी रात दिन है
कौन क्षण ऐसा जो नैनन अश्रु बिन है
जानता हूँ मैं एकाकी एक ही पल
इस जगती के सारे दुखों से कठिन है
हाय! कैसी क्रूर विपदा ने दी मुझको मात
कौन जिस से कह सकूँ मैं ... मीत अपनी बात

स्मृतियों के वातायन से

स्मृतियों के वातायन से
होती हुई तुम्हारी छवि
प्रतिदिन हृदय पर दस्तक देती है
चली जाती है
मेज़ पर रखा
तुम्हारे नाम लिखा प्रेम गीत
उड़ते उड़ते
बरामदे तक पहुँच गया था कल
इस से मुझे पता चला
तुम कहीं पश्चिम दिशा में हो आजकल
गोरैया कोयल कबूतर झींगुर
कोई कुछ बोलता नहीं आजकल
जाने क्या राज़ तुम इनको बता गई हो...
आज भी महीने के बाईस तारीख को
कोई आसमानी सूट में दिखता है न
ऐसा लगता है जैसे तुम आ गई हो

चाँदनी ओढ़ लेगी आसमानी चुनर

चाँदनी ओढ़ लेगी आसमानी चुनर
फूल सेमल के राहों में मुसकाएँगे
अपने गीतों को सुनते सुनाते हुये
हम किसी मोड़ पर तुमको मिल जाएँगे

हम विगत के ही गम में थे टूटे हुए
प्रेम आया भी तो समझ पाए कहाँ
होश लौटा तो फिर थी वही दास्ताँ
जो मिला मान बैठे उसे हमनवाँ
देह से जो परे... हम मिलेंगे कहीं
ज़ख्मी दिल कैसे दोनों छुपा पाएँगे
अपने गीतों को सुनते सुनाते हुये
हम किसी मोड़ पर तुमको मिल जाएँगे

मैं समझता हूँ राहें कठिन है बहुत
कैसा लगता है जब साथी मुड़ जाता है
पर ये सोचो कि दस्तूर ऐसा ही है
टूट कर दिल ही अच्छे से जुड़ पाता है
आधी आधी मोहब्बत के हारे हुये
हम मुकम्मल कहानी बना जाएँगे
अपने गीतों को सुनते सुनाते हुये
हम किसी मोड़ पर तुमको मिल जाएँगे

अपनी प्रेम कहानी है

प्रीत रहेगी अमर सदा
ये दुनिया आनी जानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

किसने अपनी प्रेम कहानी
सूखे पत्तों पर लिख दी
माया वन में ढूँढ़ रहा था
सोचो तुम कैसे मिलती
इस प्यासे चातक के हिस्से

कब बरखा का पानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

पिछले जनम में मैंने शायद
बहुत तपस्या की होगी,
तुमसे एक पल मिलने को ही
कितनी सदियाँ जी होगी
तेरी आँखों का इक आँसू
सबसे महँगा पानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

ये न सोचो हम तुम आखिर
क्यूँ मिलकर न मिल पाए
दोनों और थी बेकल आँखें
हम आखिर किस पथ जाएँ
रिश्ते नाते दुनिया दारी
बातें वही पुरानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

मेरी हो तुम मेरी रहोगी
सौ जन्मों का वादा है
जीते जी मर जाना तुम बिन
हाँ मुझको भी आता है
तुमको लफ़्ज़ों में न पिरोऊँ
तो यादें मर जानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

इन मोती सम नयनों को
क्यूँ अश्रु में भिगोती हो
धरती पर जल कम हो जाता है
जब जब तुम रोती हो
मेरी खातिर सब से लड़ना ,
ये कैसी नादानी है

और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

तेरे मेरे दिल मिलने पर
कितने ही दिल टूटे थे
एक हम तुम ही सच्चे थे
और सारे नाते झूठे थे
बाहर हँसना अंदर रोना
यूँही उम्र बितानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है

सुख के दुःख के पथ पर चलते
चलते कैसी भूल हुई
तुमको पाने की चाहत में
सारी दुनिया दूर हुई
गीत , कविता , गज़ल तुम्हारे
प्रेम की यही निशानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है...

हम दोनों ने ये चाहा था,
प्रेम हमेशा अटल रहे
आज को जी भर के जी लें,
क्या जाने हम कल न रहें
इन गीतों में तुमको पा कर ,
दुनिया हुई दीवानी है
और इस जग में सबसे सुंदर
अपनी प्रेम कहानी है....

मैंने जब देखा

मैंने जब देखा उसे एक बार रोते हुए
नज़्में ख़ामोश थी हर अशआर रोते हुए

ख़ुश ख़ुश रहते है वक़्त रुख़्सत सब तेरे और,
देखा नहीं जाता मुझसे फिर घर बार रोते हुए

तीन ही लोग दुःखी हैं तेरे जाने से घर में,
एक मैं , तेरा गम और दरो दीवार रोते हुए

रोज़ मेरे पास से हँसता हुआ जाता है वो,
रोज़ उसे कोई भेजता है मेरे पास रोते हुए

कितने सारे गम मैंने देखे हैं और देख सकता हूँ
देखा नहीं जाता मगर मेरा यार रोते हुए

यूँ ही बसर ज़िंदगी होगी

यूँ ही बसर ज़िंदगी होगी
पैन होगा डायरी होगी

उसके गम में आँसू बहेंगे
अपने गम में शायरी होगी

एक लड़की मेरी खातिर
सारी दुनिया से लड़ी होगी

मेरे बाद , मेरी दुनिया
किसकी दुनिया रही होगी

मेरे ज़िक्र पर फिर से
उसने बात बदली होगी

जिसको सूट पसन्द बहुत था
उसने साड़ी पहनी होगी

अब इश्क़ तो होने से रहा
जिससे होगी दोस्ती होगी

रात का सफ़र लम्बा होगा

रात का सफ़र लम्बा होगा
चाँद भी तनहा तनहा होगा

अक्सर अकेले में सोचता हूँ
तुमने वही सूट पहना होगा

मेरी कविता में अक्सर तुम्हें
खुद का चेहरा दिखता होगा

मुझे भुलाने वो एक शख्स
रोज़ तुमसे मिलता होगा

तुम कैसे उसको देखती होगी
वो कैसे तुम्हें छूता होगा

कौन तुम्हें आधी रात को
मेरी ग़ज़लें सुनाता होगा

तुम्हारे दिए हुए दर्द से मेरा
यक़ीनन पुराना रिश्ता होगा

मैं था तुम थी बातें थी

मैं था तुम थी बातें थी
कितनी छोटी रातें थी

इतने सुंदर चेहरे पर
कितनी तन्हा आँखें थी

दिनभर खुश खुश रहते थे
ऐसी मीठी यादें थी

मेरी पहली कमाई हमेशा
तुमसे हुई मुलाकातें थी

मुझसे तुम्हारी धड़कन थी
और तुमसे मेरी साँसें थी

इस दुनिया में हमसे अच्छी
सिर्फ हमारी यादें थी

उज्जैन से पहले

दिल धड़क उठता है यादें जगाती है उज्जैन से पहले
कोई मीठी सी याद कानों में गुनगुनाती है उज्जैन से पहले

व्रत रखकर सावन के महीने में महाकाल को जाती हुई,
पवित्र दुआ सी एक लड़की याद आती है उज्जैन से पहले

कितनी सारी यादें आकर ज़ेहन में बैठ जाती है,
ट्रेन अचानक से जब रुक जाती है उज्जैन से पहले

न जाने किसका खौफ़ है न जाने किससे डरती है वो
मुझसे किये सारे वादे भूल जाती है वो उज्जैन से पहले

इसलिये था घड़े का पानी मीठा

वहशी भँवरों की आँख फिसली है,
वो गुलशन की इकलौती तितली है

कैसे हो पायेगा मिलन हमारा,
आस पास के सब लोग जंगली है

मैं खौफ़ खाता हूँ पानी से और,
वो समंदर की एक मछली है

तो इसलिये था घड़े का पानी मीठा,
कुएँ से उसकी पायल निकली है

न मिली मोहब्बत तो कोसने लगे उसे,
तुम्हारा हिज़्र झूठा है तुम्हारा इश्क़ नकली है

बादल

कई दिनों पहले से,
बादलों को रोक दिया गया था,
बाहर निकलने से
समंदर से मिलने से
कि बादलों को कहा गया था
दुनिया का दस्तूर निभाना है
कि उन्हें बहुत दूर जाना है,
घर से , समंदर से
बादल अब निकल चुके हैं घर से,
और बरस रहे हैं रह रह कर
किसी को याद कर
काले घेरे आ गए हैं उनमें
रातों को जागते हुए
अधजगे नैन निहारते हुए
जिन प्रेमियों को आषाढ़ में
घने बादल भिगोते हैं
हकीकत में वे बादल
समंदर को याद कर
फूट फूट कर रोते हैं!

विरह से व्यथित मन में

विरह से व्यथित मन में,
एक सौंधी सी महक उठी है,
मुरझाये मन में
आषाढ की कुछ बूँदें बरस उठी हैं
नए रास्तों
नए मंज़िलों की ओर
अब ज़िन्दगी चलने लगी है..
तुम्हारे चले जाने के
कई सालों बाद,
ज़िन्दगी फिर से
ख़ूबसूरत लगने लगी है!!!

अब हमको मिल लेना चाहिये!!

खुल चुकी हैं अब,
बादलों की आँखें..
और टपक पड़ें हैं कुछ आँसू,
पहली बारिश बनकर...
धुंधला गई है, तुम्हारी तस्वीर
स्मृतियों के कोहरे में..
और लिखी जा चुकी है
सारी कविताएँ,
तुम्हें याद कर के...
कुछ और आगे
खूबसूरत सा
लिखने के लिये,
तुम्हारा चेहरा दिखना चाहिये
अब हमको मिल लेना चाहिये!!

ये माना तुम अब नहीं प्रिये

शब्दों में वेदना कही प्रिये
ये माना तुम अब नहीं प्रिये
तुम आई थी जाने के लिये
कुछ स्वप्न दिखाने के लिये
कुछ ख्वाब सजाने के लिये
नित अश्रु धारा बही प्रिये
ये माना तुम अब नहीं प्रिये

तुम जैसी भी हो आ जाना
जब जब तुम चाहो आ जाना
द्वारे से जब निकलो आ जाना
हाँ हाँ मैं गलत तुम सही प्रिये
ये माना तुम अब नहीं प्रिये

सारे लोग उस सूरज को पाने जा रहे हैं

सारे लोग उस सूरज को पाने जा रहे हैं
हम पँख जला बैठे सो वापस आ रहे हैं

हम जानते हैं सच्ची मोहब्बत की कीमत,
सो अपनी लैला को मजनू से मिला रहे हैं

उसकी याद , उसकी बात , बीते लम्हात
एक सस्ती ज़िंदगी कितनी महँगी बीता रहे हैं

सोचा था उसकी खातिर ज़माना भूलेंगे पर,
ज़माने की खातिर अब उसको भुला रहे हैं

रूठा पिया मनाऊँ मैं कैसे,

रूठा पिया मनाऊँ मैं कैसे,

चाँद नैनन में था जिनसे,
अश्रु बहे दिन रैन इनसे
नित नित नैन निहारूँ मैं कैसे
रूठा पिया मनाऊँ मैं कैसे,

लो मरोड़ो ये कलाइयाँ,
यूँ न मुँह मोड़ो ओ सैयां
हृदय दशा दिखाऊँ मैं कैसे
रूठा पिया मनाऊँ मैं कैसे...

कर्ण मौन है

शूरवीर कौन है,
पाण्डवों के अट्टहास में
कर्ण मौन है

कुंती मध्यस्थ है
अर्जुन सशस्त्र है
बाकि पाण्डव गौण है
कर्ण मौन है

गुरुओं का ये संग्राम है,
इस तरफ परशुराम है
सामने गुरु द्रौण है
इसलिये कर्ण मौन है

रहनुमा बदगुमां हो शायद

रहनुमा बदगुमां हो शायद
आसमां धुँआ धुँआ हो शायद

तुझसे बिछड़ कर ज़िंदा रहना
सच्चे रक़ीब की दुआ हो शायद

माहे फरवरी में ऐसी सर्दी,
ग़ैर ने उसको छुआ हो शायद

फिर से उसने कंगन पहनें,
फिर से इश्क़ हुआ हो शायद

रात के तीसरे पहर

रात के तीसरे पहर
जब भी बात करते हैं हम
मेरी एक ही शिकायत रहती है
कि वो ज्यादा नहीं बोलता!
मगर जब भी मैं सुनाऊँ
कोई शेर, कोई कविता
उसका पसन्दीदा गाना
या सुनाता ही चला जाऊँ
मेरा बीता हुआ अफ़साना
वो अचानक बोल उठता है
" वो ही तीन लफ़्ज़ "
एक एक लफ़्ज़ उसका
कानों में मिश्री है घोलता,
और मेरी वही शिकायत
कि वो ज्यादा नहीं बोलता!

बस एक बार

बस एक बार,
मुझे कर लेने दो
तुमसे मोहब्बत
छूने तो दो मुझे,
देह से परे
तुम्हारी आत्मा
एक बार अपने
अवचेतन में
मुझे चैतन्य कर
सौंप दो
खुद को
मेरे हृदय द्वार पर
तब शायद
तुम्हें ये एहसास हो
कि मोहब्बत
इतनी बुरी भी न थी
मोहब्बत
एक बार तो की जा सकती थी ...

रूठे यार मना रहें हैं हम

रूठे यार मना रहें हैं हम,
ज़िन्दगी ऐसे बिता रहे हैं हम

आज भी घर में अनाज नहीं बचा,
बच्चों को कहानी सुना रहे हैं हम

शोहरत का नशा भी कितना अजीब है,
दोस्तों को एहसान गिना रहे हैं हम

मोहब्बत अपनी बिरादरी में करना,
ये ही बच्चों को सीखा रहे हैं हम

एक ही चीज़ सिखाई नहीं जाती,
एक ही चीज़ सीखा रहे हैं हम

जिसको हमारा नाम तक न मालूम,
उस पर ज़िन्दगी लुटा रहे हैं हम

क्या करें मगर ये ज़हर भी तो मीठा है,
सो रफ़ता रफ़ता उसे भुला रहे हैं हम

अंदर अंदर घुटती हो

अंदर अंदर घुटती हो,
खुद ही कितना सहती हो

जाने क्या है उस दिल में,
न लिखती हो न कहती हो

मेरा नम्बर याद नहीं है ?
तुम भी कितनी झूठी हो

ऊपर ऊपर खुश रहती हो
भीतर भीतर रोती हो

मेरी ईद उसी दिन होती है,
जिस दिन खुल कर हँसती हो

मैं हो गया हूँ तुम सा अब,
और तुम अब मेरे जैसी हो

सर्द दिसम्बर तनहा चाँद

सर्द दिसम्बर तनहा चाँद
गलियों गलियों भटका चाँद

अपना दाग छुपाकर बोला
मुझसे अच्छा तेरा चाँद

सारे तारे खो कर बैठा
पूनम कितना तनहा चाँद

खुशक पत्तों पर ओस बिछी थी
शब भर कितना रोया चाँद

सबको शबनम बाँटता फिरता,
खुद में कितना प्यासा चाँद

एक अमावस छुट्टी लेकर
मेरी ग़ज़लें पढ़ता चाँद

जाने किसके हिस्से आया,
अबके सावन मेरा चाँद...

अगर दिल में मोहब्बत नहीं है

अगर दिल में मोहब्बत नहीं है
दोस्ती की भी जरूरत नहीं है

सौ दो सौ की भीड़ संभलती नहीं,
मैं कहता हूँ कि तू हुकूमत नहीं है

मैं तेरे हर फैसले मंजूर करता हूँ
तू एक आलोचना से सहमत नहीं है

कहाँ अब यार , इश्क , और वो किस्से
साँस लेने तक की फुरसत नहीं है

तुम जब बुलाओगे वो जरूर आयेगा
वो जब बुलाये कहना फुरसत नहीं है...

रावण के मन में था रावण

एक बार स्वर्ग की अप्सरा
रम्भा जिसका सौन्दर्य खरा
पिय से मिलने को जाती थी
देखो कैसे बलखाती थी

सहसा अचानक बात हुई
किसी के आने की आहट हुई
देखा तो सामने था रावण
जिससे काँपे सुर नर मुनि जन

रस्ता रोके था खड़ा हुआ
रम्भा को अचम्भा बड़ा हुआ
हाथ जोड़ उन्हें प्रणाम किया
रावण का पूर्ण सम्मान किया

रावण के मन में था रावण
देख रूप रंग बिगड़ा यूँ मन
बोला सुंदरी मेरे साथ चलो
बन दासी मेरे साथ रहो

रावण की दासी कहाओगी
हर ओर प्रसिद्धि पाओगी
रम्भा बोली मुझे क्षमा करें
इस अबला पर कुछ दया करें

राजन आपका भाई कुबेर
पुत्र उनका जो नलकुबेर
उनसे मिलने का वादा है
स्व कुल की ही मर्यादा है

मैं पुत्रवधु आपकी ही हूँ
माता सुलोचना सी ही हूँ
कृपया कर मुझको जाने दे
आँच मर्यादा पर न आने दे

रावण ने उस पर जोर किया
कर शील भंग और छोड़ दिया

बेबस रम्भा यूँ पहुँची जब
सुन नलकुबेर ने फिर यह सब

रावण को तब ही श्राप दिया
पापी को उसका पाप दिया
सुनकर श्राप सृष्टि धूँजी
एक क्रोधाग्नि तब ही गूँजी

सुन रावण गर तूने अब
पर नारी शील हरा जो अब
इच्छा विरुद्ध गर स्पर्श किया
सतीत्व का जो तूने हरण किया

ज्यों लंका में तू उसे लाएगा
बस तभी काल छा जाएगा
रावण यह सुनकर सहम गया
मन का था जो सारा वहम गया

सीता को इसलिये छू न सका
लंका के अंदर रख न सका
जब मन में भय छा जाता है
संयम मन में आ जाता है
संयम मन में आ जाता है...

हम बस राह का पत्थर पलटने वाले है

हम बस राह का पत्थर पलटने वाले है
वो और होंगें जो दुनिया बदलने वाले है

आज सिंगार बस काजल लगा है नैन में
वो आफ़ताब से ज्यादा चमकने वाले है

ज़िक्रे वफ़ा जो छिड़ा वो सरकने यूँ लगे
जानता हूँ यार हौले से खिसकने वाले है

जितनी थी मोहब्बत सब पीस ली है मैंने
वो अब मेरी ग़ज़लों में महकने वाले है

अजीब आँधी वक्रत चला गया

अजीब आँधी वक्रत चला गया
एक जुगनू सूरज जला गया

अफ़सोस उसके जाने का नहीं,
वो वक्रत से पहले चला गया

एक सिरा लिये मैं कबसे खड़ा था,
वो आया मुझे खुद से मिला गया

ओस दर ओस इश्क पत्तों पर था,
आँधी लिये वो पूरा शज़र हिला गया

जहाँ झुक जाये सिर , उसे दर कहते हैं

जहाँ झुक जाये सिर , उसे दर कहते हैं
माँ जहाँ रहती है हम उसे घर कहते हैं

सीधा सा सवाल मेरा इश्क़ है या नहीं
वो मगर जवाब में अगर मगर पर कहते हैं

अज़ीब शख्स है धुँआ रोज़ फूंकते हैं
और आबो हवा को ज़हर कहते हैं

कहते हैं मैं ही पहला हमसफ़र हूँ उनका
और कितने ही लोग उन्हें हमसफ़र कहते हैं

हम तुझको उज्जैन घुमाया करते थे

हम कितने ही ख्वाब सजाया करते थे
हम तुझको उज्जैन घुमाया करते थे

हमसे सारी दुनिया हँस कर मिलती थी
हम जब तुझसे मिलने आया करते थे

तारे गुस्से से टिम टिम टिम करते थे
हम छत पे जब चाँद बुलाया करते थे

हम पर कितनी शोखी सी आ जाती थी
हम बस तेरा झूठा खाया करते थे

फिर हमने भी बाहर जाना छोड़ दिया था
हम बस तेरे ख्वाब में आया करते थे

हाल ए दिल

सर्द रात,
आसमां पे चाँद,
और तुम्हारी याद..
इतना ऊपर चढ़ा नहीं जाएगा...
हाल ए दिल हमारा,
यकीनन बताना है मगर,
हमसे लिखा नहीं जाएगा..
तुमसे पढ़ा नहीं जाएगा...

भूल जाता हूँ

मैं तुम्हें याद करने का बहाना भूल जाता हूँ
इतना याद करता हूँ कि भुलाना भूल जाता हूँ

कितनी सारी बातें बतानी होती है मुझे,
कितनी सारी बातें मैं बताना भूल जाता हूँ

कितनी बार हथेली पर लिखा है तेरा नाम,
कितनी बार मैं नाम छुपाना भूल जाता हूँ

हर एक एहसास से मुझे मोहब्बत है तेरे,
हर बार एक एहसास मैं जताना भूल जाता हूँ...

एक तुम्हारे

एक तुम्हारे
ना होने से
यूँ तो कोई
कमी नहीं है
मगर
तुम जो
होते अगर
तो जिन्दगी
और खूबसूरत होती...

स्पर्श

उस वक़्त,
जब सभी को
मेरे तन का
स्पर्श चाहिए था
उस वक़्त प्रिये
तुमने मेरी
आत्मा को
छुआ था. . .

इंदौर

बेस्ट फ्रेंड की बर्थडे ट्रिट
"बर्फी" मूवी का पहला शो
बिजली के बिल की आखिरी तारीख,
वार्षिक समारोह की फाइनल रिहर्सल
खडूस प्रोफेसर का असाइनमेंट,
मौसी के लड़के की शादी,
भारत पाकिस्तान का वर्ल्ड कप मैच

कितने सारे काम थे,
सारे काम छोड़ आया था,
तुझसे पहली बार,
जब मैं इंदौर मिलने आया था. . .

माँ

समय से खाना खा लेना,
रोज़ जाने से पहले,
और आने के बाद
फ़ोन लगाना,
बाहर का कुछ मत खाना,
अगले संडे कैसे भी हो
घर आ जाना...
पहली बार जब
दूर हुआ था तुमसे
रात भर तुम्हें खोजती हुई
मेरी आँखें कहाँ सोई थीं
मुझे पता है माँ,
उस दिन हॉस्टल से
घर लौटते हुए
तुम पूरे रास्ते रोई थीं...

ज़िन्दगी से मेरी कोई दुश्मनी भी नहीं

ज़िन्दगी से मेरी कोई दुश्मनी भी नहीं,
तुम्हारे बिन ज़िन्दगी इतनी बुरी भी नहीं

जिसके बिछड़ने का एक मुद्दत से गम है
वो चीज़ तो हमें कभी मिली भी नहीं

उनका ये कहना कि दिन रात याद करते हैं
हमें तो मगर आती एक हिचकी भी नहीं

वो जिससे मिलने में मीलों दूर तक आया,
वो मगर अपनी खिड़की तक निकली भी नहीं

तेरा आँसू बहाना ग़ज़ब हो गया

तेरा आँसू बहाना ग़ज़ब हो गया,
मेरा शिकवा वही पे ख़तम हो गया,

भीगी पलकों पे उतरी जो तेरी हँसी,
उन आँखों का आँसू शहद हो गया

तूने मुझ से बनाई है जब से दूरी,
पूरे उज्जैन में कायम अमन हो गया

कैसा दस्तूर निकला है दुनिया में आज,
संग माँ बाप रहना वज़न हो गया...

दर्द होगा न आह होगी!

दर्द होगा न आह होगी!
मेरे हर शेर पर वाह होगी

एक तुम्हारी शादी के पीछे
चार ज़िन्दगियाँ तबाह होगी

कैसे किसी से इश्क़ होगा,
कैसे किसी से निबाह होगी

सारे रिश्ते झूठे होंगे,
बातें रख रखाव होगी

मुझे तुम से दूर करने को,
उसी दोस्त की सलाह होगी

पहली बारिश

मिट्टी की सौंधी खुशबू
जो छू जाती थी
अन्तर्मन को
अनगिनत यादें
जिनसे महक उठती थी
सारी दीवारें घर की
स्मृतियाँ जो वाष्प बन कर उड़ गई थी
फिर से लबालब भर गई

मुझको उसकी दो आँखें ने बताया
कल शाम
उज्जैन की पहली बारिश थीं

मैं और वो

मुझे कविता पसंद है,
उसे हॉलीवुड मूवीज..
मैं गुनगुनाता हूँ गुलज़ार को,
वो अंग्रेजी गाने सुनती हैं..
वो घूमती है, खुली आसमां सी आज़ाद,
मैं खोया रहता हूँ, खुद में अकेला,
बिलकुल अलग है, मुझसे,
वो हर बात में,
कहा था, हमेशा रहेंगे साथ. . .

पिछले बरस सुना है,
शादी हो गयी उसकी..
आजकल वो,
गुलज़ार को पढ़ती है
हिंदी गाने भी सुनती है,
जब अकेले होती है... खुद में,
और... मैं ... आजकल ...
बाहर ज्यादा रहता हूँ,
और, सुन लेता हूँ कुछ अंग्रेजी गानें
जिन्हें वो अक्सर गुनगुनाती थी....

उसकी हर इक बात मुहब्बत

उसकी हर इक बात मुहब्बत
संग गुज़रे लम्हात मुहब्बत

जो बोले वो बात ग़ज़ल है
जो उमड़ें जज़्बात मुहब्बत

सारे रिश्ते नाते झूठे
उसका दो पल साथ मुहब्बत

दुनिया जैसे जून दोपहरी
सावन की बरसात मुहब्बत

श्री राम

चले जातें हैं धर्म की रक्षा के लिए
गुरु के पद चिन्हों पर
छोड़ देते हैं राज्य सत्ता और देश
माता की आज्ञा पालन के लिए
जिनके मस्तक पर था राजयोग
वन वन घूम कर सहते हैं पत्नी वियोग
पुत्रों का जन्म और पिता के आखिरी दर्शन
नहीं कर पाते हैं
पिता वियोग
पत्नी वियोग
पुत्र वियोग सहना
बहुत आसान है श्री राम को ग़लत कहना
वैसे ही
जैसे बहुत कठिन है
श्री राम बनना!!!

बुद्ध

होने वाली यशोधरा को ,
मुहल्ले की छत पर तकता छोड़ कर
चुपचाप ज़िंदगी को समझने के लिए
कई आँखों में सावन छोड़ जाते हैं
मैंने देखा है
मेरे गाँव के कितने ही लड़के
सूने घर के सपनों की खातिर

बुद्ध हो जाते हैं...

शाबाश अभिषेक

सब टूट कर हो जाते हैं उदास अभिषेक ,
तू खूब मुस्कुरा रहा है शाबाश अभिषेक!

फिर से आयी वही बात अभिषेक ,
छूट गया उसका भी साथ अभिषेक

दिन तो हो जाएगा दफ़्तर में दफ़्तर,
कैसे मगर काटेगा तू रात अभिषेक

एक रिश्ता अधूरा, था इश्क़ अधूरा,
रह गयी अधूरी मुलाक़ात अभिषेक

तू लिखता है सोच के किसी और को ,
कोई और समझता है जज़्बात अभिषेक

उसका दिया ताबीज़ गज़ल

उसका दिया ताबीज़ गज़ल

फूलों जैसी चीज़ गज़ल

नहीं मानती कोई बंधन,

एक मासूम नाचीज़ गज़ल

मेरी सबसे सुंदर बेटी,

बह से खारिज़ गज़ल

अप्रेम विवाह

जिसे कभी देखा ही नहीं,
जिसे कभी मिली भी नहीं..
प्रेम में पड़े घाटों को छोड़ आती है,
फिर एक गहरे समंदर में समा जाती है...
दर्द से मगर कभी एक आह नहीं भरती..
मेरे इलाक़े की नदियाँ प्रेम विवाह नहीं करती...

ज़ख़्म की ऊपरी सतह पर लिखना

ज़ख़्म की ऊपरी सतह पर लिखना
आसान नहीं है विरह पर लिखना

सब लिखेंगे बेवफ़ाओं पर मगर,
तुम बेवफ़ाई की वजह पर लिखना

लिखो उसको एक कोरी चिट्ठी
और नाम आँसुओं की जगह पर लिखना

रात के क्रिस्से भटकाएँ रहबर ,
तुम लिखना मगर सुबह पर लिखना

कविताएँ

अनकहा अनसुना कहकर कविताएँ
उड़ चली उसके शहर कविताएँ

पहली बार मुस्कुरायी दुल्हन
मेरी लिखी पढ़कर कविताएँ

दिल के सारे रास्ते बंद हैं,
यादें बनी हैं जम कर कविताएँ

आँखों में एक चेहरा रहा
निकली आँसू बनकर कविताएँ

बातें बिगड़ी बातों से

कुछ लम्हें की यादों से,
बातें बिगड़ी बातों से

मेरी एक तस्वीर गिरी,
मेहंदी वाले हाथों से

आँसू बनकर शे'र गिरे,
इक लड़की की आँखों से

चाँद है कितना बेवफ़ा,
पूछो तनहा रातों से

सीखा मैंने भरोसा करना,
उसके झूठे वादों से

जाने किसकी चीख सुनी,
अब डरता हूँ बारातों से

अंदर अंदर घुटना दुख है

अंदर अंदर घुटना दुख है

ऊपर ऊपर हँसना दुख है

पढ़ लेते थे जो आँखों को

उनको दुख न दिखना दुख है

जो हँसता था बहुत जियादा

सोचो उसको कितना दुख है

उनका गुस्सा सर आँखों पर

उनका कुछ न कहना दुख है

किसको लिखना किसको पढ़ना

सबका अपना अपना दुख है

तेरी यादों में यूँ बेसबब खो गया

तेरी यादों में यूँ बेसबब खो गया
ओढ़कर स्वप्न मैं जाने कब सो गया

ज़िंदगी के उजाले क्षणिक ही रहे
प्रेम राहों में दीपक जलाता रहा
तेरी मेरी कहानी ग़ज़ल सी रही
दिल के कमरे में यादें सजाता रहा
फिर न लौटा कोई तुझमें जो खो गया
ओढ़कर स्वप्न मैं जाने कब सो गया

प्रेम के वन में हम तुम भटकते रहे
सारा वनवास विरह में ही हारा गया
दुनिया जैसे थी कौरव रचित चक्रव्यूह
प्रेम अभिमन्यु था निरीह मारा गया
मुझको ढूँढ़ें कोई मैं कहाँ खो गया
ओढ़कर स्वप्न मैं जाने कब सो गया

लघु कवितायें

जॉब की मसरूफ़ियत में उलझ गये हैं ऐसे कि
मुलाक़ात का वक्त नहीं न फ़ोन कर सकते हैं
अब जबकि न वक्त है न इश्क़ हैं न बचे हैं हम
माँ ने इजाज़त दी है कि मुहब्बत कर सकते हैं

.

न hii करते हैं न hello करते हैं..
वो लोग जो मुझको follow करते हैं
आजकल शागिर्द दो लफ़्ज़ सीखते ही
अपने उस्ताद को unfollow करते हैं

.
राज कुमारी लगती हो ,
जान हमारी लगती हो ,
इतनी DP क्यूँ ही बदलना
तुम सबमें प्यारी लगती हो....

.
दूर परदेस का साथी इश्क़ में चुन लेना चाहिए
इसी बहाने एकाध शहर भी घूम लेना चाहिए
ये भी कोई बात हुई कि मरहम ढूँढते फिर रहे हो
उसका हाथ जला है जानाँ तुम्हें चूम लेना चाहिए

.
क्या बताएँ राज़ हम उनको बता सकते नहीं
आने वाले कल को माज़ी से मिला सकते नहीं
हर शायरी के बाद पूछा जाता है वो कौन थी
हम नई मुहब्बत को पुराने शेर सुना सकते नहीं..

.
मोहब्बत की भेजी हुई कोई निशानियाँ नहीं देखी
किरदार में ऐसे डूबे कि हमने कहानियाँ नहीं देखी
मैंने कहा आपके आँख जुल्फ़ें कान कितने सुंदर हैं
वो बोले कि आपने मेरी कानों की बालियाँ नहीं देखी

.
आप क्या जानो होती है
मुझको कितनी ही मुश्किल
इतनी कविता आपके पास
मेरे पास एक ही दिल

.
मयख़ाने से आने वाले सीधे चल रहे थे
और तुझसे मिलकर आने वाला झूमता हुआ पकड़ा गया

दिनभर तुझसे झगड़ने वाला एक शायर कल रात
तेरी तस्वीर अपने होंठों से चूमता हुआ पकड़ा गया

.

ये दुनिया ऐसी ही है , राह में काँटें बोती है..
रोज़ कोई मिथिला की बेटी , अपने नैन भिगोती है..
वही लोग है वही सोच है, आज भी उनके अंतस में..
सीता की पीड़ा से छलनी , आज भी कोसी रोती है...

.

तभी समझ जाना चाहिए था,
मिलन रहेगा आधा...
जिस दिन बोली तुम कान्हा हो,
मैं हूँ तुम्हारी राधा...!!!

.

मेरी कविता में ज़िक्र है जिनका
उनकी यादों में न जाने कौन होंगें
किसी का दूसरा इश्क़ कभी न बनना
दरमियान में हमेशा ढाई लोग होंगें...

.

ख़त के ऊपर नाम लिखा था अक्षर उखड़े उखड़े थे
दोनों ही बाहर खुश दिखते अंदर उजड़े उजड़े थे
महाकाल के भीतर हमने जो तस्वीर खिंचवाई थी
ख़त को खोला अंदर देखा दो दिल टुकड़े टुकड़े थे...

.

प्रेम न लब से कहा जाये न ये बात जो बिकती है
उसके चाहने वालों तुमको ये भी बात न दिखती है
मेरा लिखा कोई न पढ़ता मैं बस उस पर लिखता हूँ
उसकी ग़ज़लें महफ़िल लूटें वो बस मुझ पर लिखती है

.

उसको ये मालूम कहाँ था ,
साथ में तारों का मेला होगा...
सूरज ये सोच कर जल्दी निकला,
घर पर चाँद अकेला होगा...

.

...या हो सकता है,
हम दोनों का प्रेम में होना
सृष्टि की इतनी सुंदर घटना हो,
कि ऊपर वाला नहीं चाहता
कि हम सिर्फ़ एक बार प्रेम करें...

.

दोनों करीब थे दोनों ही पराये
दोनों ने खुद ही से वादे निभाये
उसने भी मेरे हाथ नहीं रोके,
मैंने भी हाथ आगे नहीं बढ़ाये

.

संगमरमर से भी ज़्यादा हसीन
उस से बनी मूरत है..
तुम्हें क्या पता प्रिये!
तुम्हारे विरह पर लिखी कविता
तुमसे ज़्यादा खूबसूरत है....

.

दुनिया बहुत मुश्किल में है
ये कौन तुम्हारे दिल में है
एक शायर की सारी ग़ज़लें
मेहंदीवाली हथेली के तिल में है

.

दोबारा मुहब्बत हो, या अब चाहे ना हो,
तसल्ली हुई कि, तुम अब खफा नहीं हो..
अब के बरस मुकद्दर से अजीब मुकाम पाया,

सबसे इस बात पे लड़ा, कि तुम बेवफा नहीं हो

.

प्रेम में असफल होने पर ,
प्रेम के दौरान पाये हुए तोहफे लौटाना...
सारे संसार के प्रेम का अपमान है....

.

सब खाली है जेबें , झोले ! ऐ दुनिया ,
तू मुझको बस मुट्ठी भर सुख दे सकती थी
मैं भी आखिर कितना विरह पर लिखता
एक लड़की मुझको कितना दुःख दे सकती थी

.

एक तू थी बेखबर मगर पूरे शहर में,
तेरी मेरी मुहब्बत का पैगाम था
जिस दिन चली तेरे घर की ओर हवा
मेरी हर पतंग पर तेरा ही नाम था..

.

दुनिया भर का परदा आँखें
भीतर कितनी तनहा आँखें
इतने मीठे लबों के ऊपर ,
खारे पानी का झरना आँखें

.

एक पश्चाताप सा मन में
अंदर ही अंदर रहा,
आखिरी वक्त मैं कितना बोला
उसने मुँह से कुछ न कहा...

.

शहर घूमता था मुलाकातें किया करता था
पहले मैं कैसी प्यारी बातें किया करता था

रात से सुबह हो जाती थी तब फ़ोन कटता था
मैं कितनी कितनी शब जगराते किया करता था

.

चाँदनी से जाने उदासी का सबब
ये ज़ुरत अँधेरी रात नहीं करती
मुझे क्या हक़ जो पूछ सकूँ तुमसे
क्यूँ अब तुम मुझसे बात नहीं करती

.

जो तुम्हें पढ़ना हो वो लिख देता हूँ
तुम एक का कहो मैं दो लिख देता हूँ
जैसा लिख कर तुम शायर बने हो
ऐसी कविता मैं दिन में सौ लिख देता हूँ...

.

काश कि इक रोज़ ऐसी भी मोहब्बत हो
हम दोनों इक दूजे को बिलकुल न बदलें..
तुम सुनना भी न चाहो अपने हुस्न की तारीफ़
और मैं सुनाता ही रहूँ बशीर बद्र की ग़ज़लें...

.

उनको रिझाने पढ़ डाली हमने
ग़ालिब मीर बशीर की ग़ज़लें...
वो महफ़िल में आते ही बोले
आज कुछ अपना लिखा सुनाइये..!!!

.

जाने क्या हुआ था उसको
लिखा चुभ गया था उसको
मैं तुमको भी भूल जाऊँगा
जैसे भूल गया था उसको

.

दो ही शायर अच्छे हैं , दोनों महँगे बिकते हैं
दोनों है मशहूर बहुत , दोनों हर सूँ दिखते हैं
दोनों को दोनों का लिखा बेहद अच्छा लगता है
दोनों को मालूम नहीं है दोनों उसी पर लिखते हैं

.

हालाँकि तेरे इश्क़ पर कम लिखा गया,
जितना लिखा गया ग़ज़ब लिखा गया..
21वीं सदी का सबसे ख़ूबसूरत शेर,
मेरी ऊँगली से तेरे लबों पर लिखा गया!!

.

चाँद को समझा दिया है ओवरटाइम करने का,
सूरज को कानो कान ख़बर नहीं होगी!
तुम जिस रात आओगी मुझसे मिलने,
उस रात की फ़िर कभी सहर नहीं होगी!

.

कितनी कोशिश बाद रौशनी आई थी
तारों ने भी ख़ूब ठसक लगाई थी
एक अमावस चाँद जो रूठा था
तुम्हीं मनाकर उसको लाई थी...

.

मोहब्बत में वो जो सही रहते हैं
इस दुनिया के फिर नहीं रहते हैं
यूँ किया इनकार उसने मंदिर जाने से,
क्यों जाऊँ जब मेरे भगवान यहीं रहते हैं!

.

मैं किसी दिन चुपके से
इज़हारे मोहब्बत लिख दूँगा,
मैंने देखा है,
वो मेरा सारा लिखा लाइक करती है!!

.
किसी और की ज़ानिब नज़र उठती ही न थी,
दिल ओ दिमाग पर सिर्फ उसकी हुकूमत थी
वो भी बेवफ़ा निकली ये सच है मगर फिर भी
तमाम बेवफ़ाओं में वो सबसे ख़ूबसूरत थी...

.
5 बार, घड़ा भरने आई थी वो
मेरे घर के सामने
जिसके घर में, कुल मिलाकर
बस दो ही घड़े थे!!!

.
कविताएँ
गाँव की वो प्रेमिकाएँ हैं
जो ग़ज़लों की तरह
कभी शहर नहीं गई...

.
मुझको आखिर सब पता है,
किस दिन कब कब क्या हुआ था
सुपरमून के इक दिन पहले,
तुमने प्यार से चाँद छुआ था!!

.
तुम्हारी यादों के पतझड़ के बाद,
चाहे कितने ही आँसुओं के सावन आए..
मगर मेरे मन का वसन्त हमेशा तुम ही रहे!!

.
जिन सितारों को
अपनी रोशनाई में भुला देता है..
एक अमावस वही चाँद,
सितारों से मुँह छुपा लेता है...!!!

.
वक्रते रुख्सत अपने आँसू छुपा लेता है,
समंदर से बिछड़ कर,
बादल बहुत दूर जाकर रोता है!!!

.
कुछ इसलिये भी कशियाँ,
किनारों पर नहीं आती...
तूफ़ान में माँझी,
उनका कितना ख़याल रखता था!!!!

.
अपना इश्क़ 16108 हिस्सों में बाँट दिया,
वो इश्क़ जो सिर्फ़ उसी का हो भी सकता था
राधा ने न जाने क्यों दिल से नहीं पुकारा,
एक आवाज़ पे कान्हा रुक भी सकता था...

.
दिल का मुझको क्या करना ,
दिल तुम्हें मुबारक
मगर वो होंठों के नीचे जो तिल है
वो मेरा है

.
बेबसी , ज़माना , वफ़ा, मोहब्बत
न जाने क्या क्या कहा था उसने
मुझे मगर बिछड़ने वाले का
सिर्फ़ बिछड़ना याद रहा...

.
एक ही तरह के लोग थे सारे,
एक ही तरह की बातें थी..
एक ही तरह का प्रेम था सबका,

एक ही तरह की यादें थी...

.

एक मुद्दत से तराशी हुई किसी कारीगर की,
वो संगमरमर की सबसे हसीन मूरत है!
दूधिया रौशनी में कभी ताज़महल देखा है?
मेरा यार उस से भी ज्यादा खूबसूरत है...

.

जहाँ ठहरें हैं उसी को कह दिया मंज़िल,
ये नए दौर के राही हैं, बढ़ता कोई नहीं
कुछ दिनों से नए शायरों की बस्ती में हूँ,
सो अब हम सब लिखते हैं, पढ़ता कोई नहीं

.

चुप रहूँ तो लोग संजीदा समझते हैं,
ज्यादा हँसु तो चेहरे पर उदासी आती है
जिनके शेरों पर तुम तालियाँ पीटते हो,
मैं जो उनको सुन लूँ तो हँसी आती है...

.

धन्य है काशी विश्वनाथ ,
बसे गंगा के घाट,
पर बड़भागी तुम क्षिप्रा ,
छुआ महाकाल ललाट

.

थोड़ा ही भरे थे कि छलक गये हम
सारी मोहब्बत एक ही दिन में कर ली
आखिरी मुलाकात पे बेहद हसीं लगी वो,
उम्र भर के लिये वो सूरत आँखों में भर ली

.

तेरे बिना जो जीवन बीता,वो ही उमर बस खलती है..

अब मैं तनहा कहीं न जाता, तेरी याद संग चलती है..
मिलने तुझसे जब मैं बनारस, होकर प्रयाग से आता हूँ..
क्षिप्रा बेतवा यमुना गंगा, अपने मिलन पर जलती है..
.

ख्वाबों में आकर वो चुपके से यूँ मेरे,
आँखें, नींदें, बिस्तर तक महका देती है..
चुपके से पकड़ती है उँगलियाँ वो मेरी और,
अपनी तारीफों में ग़ज़लें लिखवा लेती है...
.

हर एक सितम तेरा गँवारा नहीं हो पायेगा..
तुझसे जो बिछड़ा फिर गुज़ारा नहीं हो पायेगा..
अबकी बार जो मुझे देखो तुम ही करीब आ जाना
, हर बार मुझसे महफ़िल में इशारा नहीं हो पायेगा..
.

एक रात लिखा मुझे उसने
वो आखिरी ख़त
" मुझे अब कभी ख़त न लिखना..."
फ़िर तमाम उम्र उसने
मेरे जवाब का इंतज़ार किया.....
.

तेरे बाद दिल पर किसी की रहमत न हुई,
तेरा ही बुरा चाहूँ कभी ऐसी हसरत न हुई
अजीब शख्स था आगाज़ ए सफ़र छोड़ गया
अजीब शख्स हूँ मुझे उससे नफ़रत न हुई
.

चाँद फ़लक पर पूरा तो नहीं होगा,
सबका इश्क़ अधूरा तो नहीं होगा
उसे छोड़कर अक्सर ये ख़याल आता है,
मेरे बाद उसके साथ बुरा तो नहीं होगा

.
जो थे यार वो खुदा हो गए,
बाकि बचे गुमशुदा हो गए...
कुछ देर एक दूसरे को देखकर,
वो उम्र भर के लिये जुदा हो गए...

.
जो न हो तुम अंदर से दिल के,
क्यों सख्त इतना हर दफ़ा बना जाए,
सौ तरीके हैं उसे छोड़ कर जाने के,
क्या जरूरी है हर बार बेवफ़ा बना जाए...

.
लहज़ा जिसका किमाम सा है,
और बातें उस से भी ख़ूबसूरत
सबसे ख़ूबसूरत है यार मेरा,
और यादें उस से भी ख़ूबसूरत...

.
परदेस में न जाने क्या सितम हुआ,
वो शख्स अब घर के बाहर भी नहीं निकलता...

.
यूँ तेरे बग़ैर ज़िंदगी का हर बरस जिया हमनें,
तेरे हिस्से का इश्क़, सबसे किया हमने
परदेस में भी जो कोई मिला तेरे शहर का,
घुमा फिरा कर इक तेरा ही हाल पूछा हमने

.
सर्द दिसम्बर में ये सौगात तेरी थी
मैं था और सारी रात याद तेरी थी
पूरी रात दोस्तों ने की कॉलेज की बात,
याद बस वही रही जिनमें बात तेरी थी

.
पहले शहर फिर गलियों फिर पड़ोसी की बात करता हूँ,
कितने एहतियातन तेरे शहर वालों से मैं तेरी बात करता हूँ...

.
जो हर किसी का ख़ुमार हो कविता नहीं लिखी जाती,
जब दोनों ही को प्यार हो कविता नहीं लिखी जाती
मुझे यूँ छेड़ छेड़ कर रोज़ रोज़ तंग न किया करो
जब सामने दिल ए बहार हो कविता नहीं लिखी जाती...

.
वो चाहता है मुझसे मिलना मगर,
ये ज़िद है कि उसकी अना भी रहे
हर बार जाता है वो रिश्ता तोड़कर
और चाहता है राब्ता बना भी रहे....

.
अपना कहती है मुझे मोहब्बत नहीं करती
वो अब भी मेरी है पर मोहब्बत नहीं करती
कोई कल कह रहा था उसने भी चाहा था किसीको
उसके बाद अब वो किसी से मोहब्बत नहीं करती...

.
बिछड़ते वक़्त तुम खामोश ही रहना
आवाज़ गर दी तो मैं लौट आऊँगा
जाते हो तो पूरी मोहब्बत ले जाना
थोड़ी भी बच गयी तो मैं लौट आऊँगा

.
कभी कभी तो मेरी ग़ज़लों से आती है
वो खुशबू जो तुम्हारी जुल्फ़ों से आती है
पूछा जो सबसे उम्दा शराब का राज़ मैंने
वो बोली ये छू कर मेरे लबों से आती है...

.
हर तरफ़ उसी को ढूँढ़ता हूँ मैं,
जो मेरी ओर नज़र नहीं लेती
कल से तबियत ख़राब है मेरी
वो ही ख़ैर ख़बर नहीं लेती ...

.
शब भर रहा आँखों में तेरा ही चेहरा
शब भर फिर नींद इन्हें अच्छी न लगी
तेरे हुस्न की बारीकियों पे जो लिखा मैंने
लोगों की वाह वाह फिर मुझे अच्छी न लगी

.
आँखों में आँसूओं की लकीर आ जाती है
न जाने पलकों तले हर रात कौन आ जाता है
कितनी कोशिश करके मैं तुम्हें भूल पाता हूँ
और फिर एक रात तुम्हारा फ़ोन आ जाता है...

.
विरह के कितने ही गीत मन से निकलने लगते हैं
बीते दिनों की जब कहीं कोई ताल छेड़ देता है
कितनी ही रातें सिरहाने नमकीन कर सोता हूँ
हर सुबह फिर कोई ज़िंके भोपाल छेड़ देता है...

.
न जाने क्या हुआ मकान में खिड़कियाँ नहीं बची,
बुजुर्गों की ज़बान में मीठी झिड़कियाँ नहीं बची,
कितने ही जवां दिल इसलिये भी परदेस चले गए,
गाँव के पनघट पर अब कोई लड़कियाँ नहीं बची...

.
दुल्हन सा घर को सजाया तो होगा
दीप चौखट पर फिर लगाया तो होगा

तेरी रंगोली में जो हाथ रंग भर देते थे
इस दीवाली उनका खयाल आया तो होगा

.

सारी रात की बातें तेरी
दोस्त मेरे थे कितने सारे
भोर हुई और सो गए सब
एक चाँद और कितने तारे

.

जुदा होते ही मरने का खौफ़ दिखाते हैं
जो साथ रहकर एक पल भी नहीं जीते
वो यार के लबों को चूम भी लेते हैं और
ये भी कहते हैं हम उनका झूठा नहीं पीते

.

वक़्ते मुफ़लिसी
एक फ़्लैट लिया था मैंने..
कल माँ आई थी,
उसे घर बना गई...

.

मिट्टी हूँ मिट्टी सा मुझको मिट्टी में मिल जाना है
मुझमें भीगी बाती रख दो बन दीपक जल जाना है
लड्डूँ तिमिर से सकल गगन में बन प्रकाश मैं छा जाऊँ
मुझ में अपने दोष सिरा दो दीपोत्सव खिल जाना है

.

जिस्म से रूह तलक इक ठंडक सी पहुंची,
ऐसा लगा कि माथे पावन चन्दन छू लिया।
एहतियाते सफ़र ज़रूरी था कि पूरे दिन महकूँ,
मैंने घर से निकलते हुये उसका बदन छू लिया॥

.

दरिया समंदर को अपना दुखड़ा सुनाती है
,सारे किनारे सुनते हैं बेसबब मज़े लेते हैं।
ये मशवरा है मेरा घर की बात घर में रखना,
कोई सहानुभूति नहीं रखता सब मज़े लेते हैं॥

.

अपने सीने से लगा कर के सारी यादें तेरी,
मैं तमाम शहर में यूँ सुबहो शाम घूमता था..
तुझसे कॉपी लेना तो एक बहाना था स्कूल में,
मैं घर आकर तेरा लिखा हर्फ़ हर्फ़ चूमता था..

.

उसका जीवन धन्य धन्य हो गया,
जिस पर महाकाल की कृपा हो गई...
एक छोटी सी नदी बहते ही बहते,
उसके चरणों को छू कर क्षिप्रा हो गई...

.

मेरा इश्क़ था तुमसे और,
मेरा शहर थी तुम..
तीन गवाह थे प्यार के,
इश्क़ , शहर और तुम..

.

तुम श्वेत वर्ण की चादर हो , मैं हूँ इक रंगरेज़ प्रिये
तुम नागफनी का पौधा हो , मैं जख्मों से लबरेज़ प्रिये
तुम कृष्णपक्ष सा अंधकार , मैं रश्मिरथी सा तेज़ प्रिये,
तुम कोहनी टिकाकर बैठी हो , मैं तीन पैर की मेज़ प्रिये

.

फिर वो ही तुम्हारी यादें,
फिर वो ही आँखें नम,
फिर वो ही बारिश का महीना,
फिर वो ही अकेले हम ...

.
जिस चाँद को देखकर करीब आ जाते थे हम
आज की रात परदेस से वही चाँद देखा मैंने
चाँद आजकल तुमसे ज्यादा करीब है मेरे ...

.
दिन भर की मेहनत , साहूकार को देकर
सो गया वो, एक खूबसूरत ख्वाहिश को लिए,
ख्वाब में आज फिर रोटियाँ आएंगी !

.
तुमसे जलकर चाँद बादलों में जा छुपा,
जब तुम सामने हो चाँद की क्या जरूरत हो
बादल तितली झरने पंछी सब देख लिए
तुम इस जहाँ में सबसे खूबसूरत हो. . .

.
मुझे पता था एक दिन चले जाओगे,
ये साथ ज़िन्दगी भर का नहीं...
मगर जिस तरह से तुम चले गये,
बिछड़ने का वो भी तरीका नहीं...

.
नहीं मैं तुमसे ख़फ़ा नहीं हूँ,
मैं ये रिश्ता चाहता ही नहीं हूँ,
अब न वो तुम रही, न तुम्हारी बातें
ऐसा लगता है मैं तुम्हें जानता ही नहीं हूँ...

.
राधा कृष्ण के जैसा साथ हम दोनों का,
एक हाथ में कलम दूसरे में हाथ हम दोनों का,
कितने बरसों बाद अब यहाँ आकर मिलें है हम,
कितने बरसों बाद आया लम्हात हम दोनों का...

.
मैं परशुराम सा प्रचंड क्रोध
तुम जनक सी मृदुभाषी प्रिये
मैं दिल्ली पुणे बैंगलोर
तुम अयोध्या मथुरा काशी प्रिये
मैं साहिर का पल दो पल हूँ
तुम अमृता का इन्तज़ार प्रिये
मैं सोमवार से शुक्रवार हूँ
तुम शनिवार रविवार प्रिये

.
क्या बताऊँ मैं अपनी,
मेरी बेबसी भी कम नहीं है
उन पर लिखी जो कविता,
वो बोले ये हम नहीं है...

.
कितने ही लोग हैं
जो लिखते हैं
किसी शख्स पर,
कितने ही लोग हैं,
जिन्हें लिखते लिखते
कोई शख्स मिल जाता है

.
एक छुअन से जो टूट गया ,
वो हार कैसा था
न आह हुई न दर्द हुआ,
वो प्रहार कैसा था
दूरियों की एक आँधी ने
आशियाँ उड़ा दिया
कैसी थी वो मोहब्बत
वो प्यार कैसा था...

शराब का नशा अपनी जगह है
मगर फिर भी,
हुआ जो मुक़ाबला
तो तेरी आँखें जीत जायेगी...

.

मैं इस उम्मीद में भरी गर्मी में खड़ा हूँ
ज्यादा तपन हो तो बादल बरसते हैं..
मोहब्बत करने का बस यही एक सिला है
मोहब्बत करने वाले उम्र भर तरसते हैं...

.

कभी बहुत तरसाती है,
कभी जम के बरसती है!
तेरे शहर की बारिश भी ,
इश्क़ तुझी सा करती है....

.

बच्चे कहाँ अब शहर से बार बार आते हैं,
गाँव में बहुत उदास उदास से त्यौहार आते हैं!!!

.

लफ़्ज़ लफ़्ज़ लिखता रहा , सुना नहीं पाया!
मैं अपना लिखा कभी , समझा नहीं पाया!!

.

शायद तुमको ये भी पता हो
बिन तुम्हारे न जीना है
शायद तुमको ये भी पता हो
आँसू आँसू ही पीना है
कच्चे निकले सारे रिश्ते
धागे बन कर टूट गए
अबके बरस उनको सीना है
शायद तुम्हें पता न हो

.
राह में जिसके लिये आँखें बिछा दी है
वो एक लड़की जो बिलकुल हवा सी है
कैसे होगी इश्क की बातें उससे कि किसी ने
पहले ही मेरी सारी ग़ज़लें उसे सुना दी है

.
इल्ज़ाम मुहब्बत के सर आया है ,
किसका लिफाफा आज घर आया है
उसकी शादी के कार्ड के साथ साथ,
तितली का टूटा हुआ पर आया है...

.
एक एक लफ़्ज़ महकता है यादों से तुम्हारी,
ये कलम अभी अभी तुम्हें छू कर गई है!
तुम कहती हो बहुत सुंदर है मेरी कविता,
मैं कहता हूँ ये बिलकुल तुम पर गई है!!

.
हर मुलाकात पर अगली मुलाकात के वादे
हर एहसास में मेरी फिक्र, बातों में मेरी बातें
आज कल बहुत शिकायत करने लगी हो
लगता है तुम भी मुझसे मुहब्बत करने लगी हो

.
एक बार जो देख ले उसके रुख़सार का तिल
तमाम शब चाँद फिर अपनी चाँदनी न पहने
वो एक रंग बस उसी पे फ़ब्ता है कि कह दो
कोई भी आज के बाद सूट आसमानी न पहने

.
लिखा था कि,
थरथराये होंठ

छलकते नैन
फैला हुआ काजल
दिल की धड़कने, यादें भी काँप रही थी. .
बिछड़ते वक्त
जब अलविदा कहा उसने
साँसे भी काँप रही थी. . .

.

एक मुद्दत के बाद मिली है डायरी,
एक मुद्दत के बाद कोई बात आई,
एक मुद्दत के बाद हुई है बारिश,
एक मुद्दत के बाद तुम याद आई. .

.

चाँद पलकें सितारे आँसू
कितनी रातें जागें आँसू
खत के आगे मेरा नाम है
मेरे नाम के आगे आँसू

.

मेरी मसरूफ़ियत को अब,
वो शायद पहचान जाती है!!
बहुत झिझकते हुए
नानी मुझे छुट्टियों में बुलाती है....

.

दिल ही जानता है किस हाल गुज़रे
कैसे तेरे बग़ैर ये चार साल गुज़रे
बैरागढ़ आते ही कलेजा बैठ जाता है
फिर वही दुआ कि जल्द भोपाल गुज़रे

.

अपना तो सारा दिन ही दफ़्तर में गुज़र जाता है ,

काम के मारे तेरे इश्क़ से क्या खाक बेहाल होंगे
कभी कभी तो मन में अक्सर ये सवाल आता है
जिस जिसको तूने छोड़ा था वो अब किस हाल होंगे

.

दुश्मन फिर भी नेक था ,
कर ली दुआ सलाम
दोस्त जो रूठा एक बार ,
आया कभी न काम

.

आपकी अदाओं को चित चोर बोलिए
इस शाम को मुहब्बतों का दौर बोलिए
बोला जो हमने कि बेहद इश्क़ है आपसे
मुस्कुराके कहा अच्छी बात है और बोलिए

.

मौसमी फूलों का हसीन बाग़ हम दोनों
थोड़ी जली थोड़ी बुझी आग़ हम दोनों
जब जब ज़िंदगी दूर तक स्याह रात थी,
बनते हैं एक दूसरे का चिराग़ हम दोनों

.

पुनीत पावन प्रेम पूरवा रहा है तुमको सूचित हो
मुदित मन मेघमय मुस्का रहा है तुमको सूचित हो
सहज सुंदर सुलोचन साँवरा सलोना सा वो
दिल के द्वार दस्तक पा रहा है तुमको सूचित हो

.

“शहर पहुँच कर खा लेना” माँ सबज़ी पूरी रखती है “
एक पुराने डिब्बे में , दो लड्डू और इमरती है “
मैं चुप चाप सा रहता हूँ माँ तू क्यूँ ये न समझती है ...
जिस दिन मैं घर से जाता हूँ भूख कहाँ फिर लगती है...

.
इश्क़ मुहब्बत प्यार की बातें
सच्ची झूठी यार की बातें
दुनियाभर की दुनियादारी
झूठा इश्क़ और सच्ची यारी
सूरज हूँ जो डूब रहा हूँ
मैं अब सब से ऊब रहा हूँ.....

.
मैं ना भूखा रह जाऊँ सो
वो भूखी रह जाती थी..
जिस दिन खाना अच्छा बनता
माँ कम रोटी खाती थी...

.
गोपियों ने बस इतना ही कहा था झूठे वादे करता है
गुमसुम वो सब काम तभी से आधे आधे करता है
बूँसी भूला पनघट भूला , भूल गया सबके ही नाम
सब कहते है 'कान्हा' दिन भर 'राधे राधे' करता है

.
एक तेरी यादें तेरी बातें और जीवन बीता ज़ाता है
दिल है जैसे सौत का बेटा सब कुछ सहता जाता है
मेरे उसके इश्क़ की गवाही चाँद को देना होती है
चाँद की क़समें खाती है वो चाँद भी घटता जाता है

.
चाँदनी को ताकते सब खड़े थे और
बादलों में वो मेरे साथ रह गई
उसने भी हटा लिया रूख से पर्दा
अपनी भी दोस्तों में बात रह गई

अभिषेक नागर की अन्य प्रकाशित किताबें :-

- इश्क़ शहर और तुम
- शायद तुम्हें पता न हो
- लप्रेक